



DR. YOGESH PRAVEEN (POSTHUMOUS)

Dr. Yogesh Praveen was an eminent writer and poet, equally competent in Hindi and Urdu.

2. Born on 28th October, 1939, in Lucknow Dr. Praveen specialized in Awadha's culture, history, arts and literature. Through his writing, he had been able to portray the truth of life and its real meaning to the readers of all age group. He was a legend when it comes to Awadh. After earning a post graduate degree in Hindi, he was appointed as Lecturer in Vidyant Hindu College. After his retirement, he kept himself engaged in literal pursuits providing colorful shades and hues on literary canvas. He was equally popular as an orator and philosopher on aspects touching Awadha's culture. He had a strong foothold on Indian Philosophy and folk culture. His personal attributes along with literary endowments made him popular in all classes of the society.

3. Dr. Praveen authored more than three dozen books popular ones being Dastane Awadh, Dastane Lucknow, Dubta Awadh, Bahare Awadh, Tajdare Awadh, Gulistane Awadh, Lakshmanpur Ki Atmakatha, Aapka Lucknow and Lucknow Nama, Translation of Jaane Alam's Naazo, Sahabe Alam, Kangan Se Katar, Monuments of Lucknow (English), History of Lucknow (English), Awadh Ke Dhara Alankaran, Awadh Ke Bhitti Chitrankan, Lucknow Ki Dharohar, Lucknow Ke Mohalle aur Unki Shaan, Lucknow Ki Shayari Jahan Ki Jawan Par, Awadh Ki Begamien, Rulars of Awadh(English), Nawabi Ke Jalwe and Lucknow Sadiyon Ka Safar. Collection of stories Kanchan Mrig, Ankvilas, Pathar Ke Swapne, Agniveena Ke Taar, Dewta Hamare Pran, Paraya Chand, Awadh Ki Lucknowa Kahaniyan are equally appreciated by readers. His poetic achievements notably Mayur Pankh, Aprajita, Suman Haar, Indra Dhanush, Sanam Khana, Peele Gulab, Shabnam, Virah Bansuri, Aadhi Sadi Ke Ujale, Guru Chalisa mesmerizes the reader. His list of books published books includes Begum Hazrat Mehal, Shagoofon Ka Shahar, Badshah Begum, Tum Bade Wo Ho, Prem Piyala, Phool Bagiya, Awadh Ke Lok Geet, Awadh Ki Lok Kathayien, Awadh Ki Parva Kathayien, Paraya Chand, Woh Rang Woh Baharein, Usha Parinay, Prem Kamal, Mahananda.

4. Dr. Praveen was a columnist for various newspapers and magazines. Darohar and Dastane Mahfil have set a chord with its readers. His programs are a regular feature on Radio and Television. Theatre also owes a lot to him. Kathak Maestro like Birju Maharaj (Urmila), Damyanti Joshi (Usha Parnaam), Bhaswati Mishra(Rasrang) have honoured his writings by including them in their performances. Prem Piyala, Kabir, Urvashi, Hum Fidaye Lucknow and several others have been performed on the stage. He penned numerous songs which have been provided tune by famous singers like Asha Bhonsle, Udit Narayan, Sudha Mehrotra, Anup Jalota, Abhijit, Usha Amonkar, Kailash, and Anuj. He had been a part of research team for banner films like Shatranj Ke Khiladi, Umrao Jaan, Junoon, Zahre Ishq etc.

5. Dr. Praveen was the senior most advisory member on the panel of Lucknow Mahotsav Mela Samiti and several other government organizations and NGOs. He presided over hundreds of cultural, literary festivals and functions and was organizer of Lucknow Mahotsava since origin of this festival 1976. He was permanent Editor of Lucknow Mahotsava Patrika Urmila and regular Professor in EMDUP, the training institute for civil services officers. Lucknow University awarded a Ph.D to Hindi Lecturer Hemanshu Sen on the Topic Writings of Dr. Yogesh Praveen- A Critical Evaluation (2003).

6. Dr. Praveen was felicitated with many awards like Balkrishna Sharma Naveen Puruskar 1973 for Mayur Pankh; Tulsi Samman for Aparajita by Uttar Pradesh Hindi Sansthan; Uttar Pradesh Sangeet Natak Academy Award 1998; Prasar Bharti Arts and Culture Award 1998; Hindi Sahitya Puruskar 2000; Uttar Pradesh Ratna Award 2002; Honarary D. Litt. Award by Meerut University 2002; Kala Bhushan Award 2002 by Uttar Pradesh Hindi Sansthan; Yashbharti 2006 Uttar Pradesh Government Highest Award; National Book Fair Award 2010; Tourism Award 2012; Shane Awadh 2015; Sanskar Bharti Award 2015 and Vaageshwari Samman 2016. He was also awarded with Rashtriya Nagar Vimanan Puruskar 1885 for Lucknow Nama and National Teacher Award President Medal 1999.

7. Books written by Dr. Praveen are famous around the world. All through his life, he had written around three dozen books, prose and poetry in Hindi which are as a lamp in the way of humanity, love, knowledge and social harmony for the society.

8. Dr. Praveen passed away on 12th April, 2021.





डॉ. योगेश प्रवीन (मरणोपरांत)

डॉ. योगेश प्रवीन एक प्रख्यात लेखक और कवि थे और हिंदी व उर्दू दोनों के ही विद्वान थे ।

2. 28 अक्टूबर, 1939 को लखनऊ में जन्मे डॉ. प्रवीन अवध की संस्कृति, इतिहास, कला और साहित्य के विशेषज्ञ थे। अपने लेखन के माध्यम से उन्होंने सभी उम्र के लोगों के लिए जीवन के सत्य और इसके वास्तविक अर्थ का चित्रण किया। अवध का जिक्र होने पर एक विभूति के रूप में उनका नाम उभर कर आता है। हिंदी में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने के बाद, उन्हें विद्यांत हिंदू कॉलेज में लेक्चरर नियुक्त किया गया। अपनी सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने स्वंय को साहित्य सृजन में व्यस्त रखा तथा साहित्यिक पटल पर विविध रंग और छटाएं उकेरी। वह अवध संस्कृति के विभिन्न विषयों पर एक वक्ता और विचारक के रूप में भी लोकप्रिय थे। उन्हें भारतीय दर्शन और लोक संस्कृति की गहरी जानकारी थी। उनके व्यक्तिगत गुणों और साहित्यिक कृतियों ने उन्हें समाज के सभी वर्गों के बीच लोकप्रिय बना दिया था।

3. डॉ. प्रवीन ने 3 दर्जन से ज्यादा पुस्तकों की रचना की, जिनमें लोकप्रिय हैं, दास्तान–ए–अवध, दास्तान–ए–लखनऊ, डूबता अवध, बहारे अवध, ताजदारे अवध, गुलिस्तां अवध, लक्ष्मणपुर की आत्मकथा, आपका लखनऊ और लखनऊ नामा, जाने आलम की नाज़ो का अनुवाद, साहबे आलम, कंगन से कटार, लखनऊ का स्मारक (अंग्रेजी) लखनऊ का इतिहास (अंग्रेजी), अवध की धरा अलंकरण, अवध के भित्ति चित्रांकन, लखनऊ की धरोहर, लखनऊ के मोहल्ले और उनकी शान, लखनऊ की शायरी, जहां की जबां पर, अवध की बेगमें, रूलर्स ऑफ अवध (अंग्रेजी), नवाबी के जलवे और लखनऊ सदियों का सफर। कहानियों का संग्रह कंचन मृग, अंकविलास, पत्थर के सपने, अग्निवीणा के तार, देवता हमारे प्राण, पराया चांद, अवध की लखनोआ कहानियों को भी पाठकों द्वारा काफी सराहा गया है। उनकी काव्य कृतियां विशेष रूप से मयूर पंख, अपराजिता, सुमन हार, इंद्र धनुष, सनम खाना, पीले गुलाब, शबनम, विरह बांसुरी, आधी सदी के उजाले, गुरु चालीसा पाठकों को मंत्रमुग्ध कर देती हैं। उनकी प्रकाशित किताबों की सूची में बेगम हज़रत महल, शगूफ़ों का शहर, बादशाह बेगम, तुम बड़े वो हो, प्रेम पियाला, फूल बगिया, अवध के लोक गीत, अवध की लोक कथाएं, अवध की पर्व कथाएं, पराया चांद, वो रंग वो बहारें, ऊषा परिणय, प्रेम कमल, महानंदा शामिल हैं।

4. डॉ. प्रवीन अनेक अखबारों और पत्रिकाओं के स्तंभकार थे। धरोहर और दास्तान–ए–महफिल स्तंरभ पाठकों द्वारा बहुत पसंद किए जाते हैं। रेडियो और टेलीविजन पर उनके कार्यक्रमों का नियमित प्रसारण किया जाता है। थिएटर में भी उनका बहुत योगदान है। कथक उस्ताद बिरजू महाराज (उर्मिला), दमयंती जोशी (उषा प्रणाम), भावसती मिश्रा (रसरंग) ने अपनी प्रस्तुतियों में शामिल करके उनकी रचनाओं को सम्मान प्रदान किया है। उनकी प्रेम पियाला, कबीर, उर्वशी, हम फिदाए लखनऊ और कई दूसरी रचनाओं का मंचन किया गया है। उन्होंने अनेक गीत लिखें, जिन्हें आशा भौंसले, उदित नारायण, सुधा मल्होत्रा, अनूप जलोटा, अभिजीत, उषा अमोनकर, कैलाश और अनुज जैसे मशहूर गायकों ने अपनी आवाज दी है। वह शतरंज के खिलाड़ी, उमराव जान, जुनून, जहर ए इश्क आदि फिल्मों की शोध टीम का हिस्सा रहे थे।

5. डॉ. प्रवीन लखनऊ महोत्सव मेला समिति और अनेक दूसरे सरकारी संगठनों और गैर सरकारी संगठनों के पैनल में वरिष्ठतम सलाकार सदस्य थे। उन्होंने सैकड़ों सांस्कृतिक, साहित्यिक महोत्सवों और कार्यक्रमों की अध्यक्षता की और 1976 से लखनऊ महोत्सव की शुरुआत से इसके आयोजक रहे। वह लखनऊ महोत्सव पत्रिका 'उर्मिला' के स्थायी संपादक थे तथा सिविल सेवा अधिकारियों के प्रशिक्षण संस्थान, ईएमडीयूपी में नियमित प्रोफेसर थे। लखनऊ विश्वविद्यालय ने 'डॉ. योगेश प्रवीन–एक आलोचनात्मक मूल्यांकन' (2003) विषय पर शोध के लिए हिंदी लेक्चरर हिमांशु सेन को पीएच.डी की उपाधि प्रदान की है।

6. डॉ. प्रवीन को कई पुरस्कारों, जैसे मयूर पंख के लिए बालकृष्ण शर्मा नवीन पुरस्कार, 1973; उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा अपराजिता के लिए तुलसी सम्मान; उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, 1998; प्रसार भारती कला और संस्कृति पुरस्कार, 1998; हिंदी साहित्य पुरस्कार, 2000; उत्तर प्रदेश रत्न पुरस्कार, 2002; मेरठ विश्वविद्यालय द्वारा मानद डी. लिट. की उपाधि, 2002 ; उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा कला भूषण पुरस्कार, 2002; उत्तर प्रदेश सरकार का सर्वोच्चत पुरस्कार, यशभारती, 2006; राष्ट्रीय पुस्तक मेला पुरस्कार, 2010; पर्यटन पुरस्कार 2012; शाने अवध, 2015; संस्कार भारती पुरस्कार, 2015 और वागेश्वरी सम्मान 2016 से सम्मानित किया गया। उन्हें लखनऊ नामा के लिए राष्ट्रीय नागर विमानन पुरस्कार, 1985 और 1999 में राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार राष्ट्रपति पदक से भी सम्मानित किया गया।

7. डॉ. प्रवीन द्वारा रचित पुस्तकें दुनिया भर में मशहूर हैं। अपने समूचे जीवन में, उन्होंने हिंदी में लगभग तीन दर्जन पुस्तकें, गद्य और कविता लिखी, जो समाज के लिए मानवता, प्रेम, ज्ञान और समरसता के लिए एक प्रकाश स्तंभ के समान हैं।

8. डॉ. प्रवीन का 12 अप्रैल, 2021 को देहावसान हो गया।